



न्यायालय

सहायक कलक्टर / उपखण्ड अधिकारी

गुढामालानी-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी -केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

वाद संख्या:-2025 / 103

दर्ज तिथि:-28.03.2025

1. जेठाराम पुत्र खेता
2. देवाराम पुत्र खेता
3. ताजाराम पुत्र खेता
4. शांति पुत्री खेता
5. कमला पुत्री खेता

जाति जाट निवासी भेराराम मूढ नगर निम्बलकोट तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर

.....वादी

बनाम

1. खेता पुत्र लादा
2. अणसी पुत्री विरदा
3. खीया पुत्र सोना
4. गंगा पुत्र सोना
5. चूतरा पुत्र बागा
6. जेती पुत्री विरदा
7. तोगा पुत्र बागा
8. देवू पुत्री विरदा
9. धापू पुत्री विरदा
10. पेम्पो पुत्री विरदा
11. राउ पुत्र बागा
12. रामा पुत्र सोना
13. रावता पुत्र बागा
14. लेहरों पुत्री विरदा
15. हुकमा पुत्र बागा
16. खेता पुत्र बागा
17. गंगा पुत्र बागा
18. चेतन पुत्र बागा
19. जगदीश कुमार पुत्र भेराराम
20. तुलछीदेवी पत्नी गंगाराम
21. दुर्गाराम पुत्र भेराराम



22. नरपतराज पुत्र भैरारा
23. पुरखा पुत्र बागा
24. पुराराम पुत्र पूनमाराम
25. पोलाराम पुत्र पूनमाराम
26. भीखीदेवी पत्नी रामाराम
27. भीखा पुत्र बागा
28. लक्ष्मणाराम पुत्र पूनमाराम
29. लाधूदेवी पत्नी खीयाराम
30. हेमा पुत्र बागा

जाति जाट निवासी भैराराम मूढ नगर ग्राम पंचायत निम्बलकोट तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर

31. तहसीलदार नोखड़ा

.....प्रतिवादी

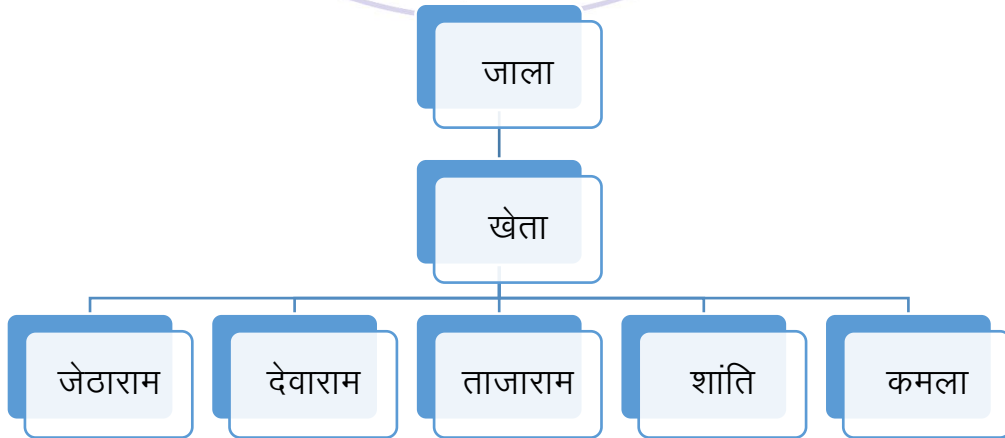
उपस्थित अधिवक्ता
वादी:-श्री ठाकराराम
प्रतिवादी:-एकतरफा

राजस्व वाद अन्तर्गत धारा-88
राजस्थान काश्तकारी अधि0-1955

---निर्णय:---

निर्णय तिथि:-29.09.2025

1. आज यह पत्रावली वाद पत्र बाबत इस्तकराहक अन्तर्गत धारा-88,188 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 का वास्ते निर्णय हेतु पेश हुई। वाद पत्र का सूक्ष्म वृतान्त इस प्रकार से है कि वादी ने निवेदन किया गया कि मुताबिक राजस्व रिकॉर्ड आराजी हाल खसरा संख्या 214/0.2427 है0, 215/0.0566 है0, 217/0.5744 है0, 216/38.5489 है0, 205/20.7589 है0 मौजा भैराराम मूढ नगर पटवार मण्डल निम्बलकोट तहसील नोखड़ा में अवस्थित है। वादीगण एवं प्रतिवादी संख्या 01 हिन्दु विधि से शासित होते हैं। वादीगण एवं प्रतिवादी संख्या 01 का वंशवृक्ष निम्न प्रकार है:-



2. उक्त आराजी वादीगण के दादा तथा प्रतिवादीगण संख्या 01 के पिता जाला पुत्र भूरा की खातेदारी आराजी थी। खातेदार जाला पुत्र भूरा की विरासत अनुसार खेता पुत्र जाला के हिस्से खातेदारी दर्ज हुई। इस प्रकार उक्त खातेदारी आराजी पैतृक आराजी है। वादीगण व प्रतिवादी संख्या प्रतिवादी संख्या 01 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत हिन्दू के अंतर्गत आने के कारण हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित रखते हैं। वादीगण, प्रतिवादी संख्या 01 की संतान हैं। उक्त आराजी पर हक अनुसार वादीगण वर्तमान में मौके पर काबिज काश्त है। वर्तमान में प्रतिवादी संख्या 01 उक्त आराजी को भू माफियाओं को बेचान करने पर आमादा है। अतः उक्त आराजी पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित होने के आधार पर वादी को खातेदार घोषित किया जाने का निवेदन किया। साथ ही वादी संख्या 04 एवं 05 द्वारा अपना हिस्सा वादी संख्या 01 ता 03 के पक्ष में मौखिक हकत्याग कर देने से वादी संख्या 04 ता 05 के हक हिस्से की आराजी वादी संख्या 01 ता 03 के पक्ष में घोषित किये जाने का निवेदन किया गया है।

3. वाद पत्र दर्ज रजिस्टर किया जाकर प्रतिवादी को जरिये सम्मन तलब किया गया। प्रकरण में प्रतिवादीगण के बावजूद विधिवत तामिल अनुपस्थित रहने से प्रतिवादीगण के विरुद्ध एकतरफा कार्यवाही अमल में लाई गई। तत्पश्चात् पत्रावली वादी साक्ष्य में नियत की गई। प्रकरण में वादीगण द्वारा साक्ष्य स्वरूप निम्न दस्तावेज प्रस्तुत किए—

दस्तावेज	संवत् / विवरण	प्रदर्श
जमाबंदी	खाता संख्या 3 सम्वंत 2076-79	प्रदर्श-01
जमाबंदी	खाता संख्या 2 सम्वंत 2076-79	प्रदर्श-02
जमाबंदी	खाता संख्या 4 सम्वंत 2076-2079	प्रदर्श-03
नामांतरकरण	नामांतरकरण संख्या 393 ग्राम पंचायत निम्बलकोट	प्रदर्श-04

4. प्रकरण में वादीगण द्वारा साक्ष्य स्वरूप निम्न गवाह प्रस्तुत किए—

नाम	जाति	निवासी
जेठाराम पुत्र खेताराम	जाट	भेराराम मूढ नगर, निम्बलकोट
देवाराम पुत्र खेताराम	जाट	भेराराम मूढ नगर, निम्बलकोट

5. पत्रावली पर विद्वान अधिवक्ता वादी की बहस सुनी गई। दौराने बहस विद्वान अधिवक्ता द्वारा वाद पत्र में अंकित बिन्दुओं को मात्र दौहराते हुए आराजी पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित होने के आधार पर वादी को खातेदार घोषित किया जाने का निवेदन किया।
6. मैंने विद्वान अधिवक्ता वादी की बहस पर मनन किया गया एवं पत्रावली पर संलग्न दस्तावेजात् का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया गया। प्रकरण में वादी द्वारा निम्न अनुतोष निवेदित किये हैं:-

1. वादग्रस्त भूमि में प्रतिवादी के साथ वादीगण को सहखातेदार घोषित किया जावे।
 2. वादी संख्या 04 एवं 05 के हिस्से की भूमि वादी संख्या 01 ता 03 के पक्ष में मौखिक हकतर्क किये जाने के आधार पर वादी संख्या 04 एवं 05 की भूमि वादी संख्या 01 ता 03 के हिस्से में खातेदारी घोषित की जावे।
7. पत्रावली पर अनुतोषवार विश्लेषण किया जाना आवश्यक है। सर्वप्रथम अनुतोष संख्या 01 जो कि निम्न प्रकार है:-
1. वादग्रस्त भूमि में प्रतिवादी के साथ वादीगण को सहखातेदार घोषित किया जावे।
8. प्रकरण में प्रथम अनुतोष राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-15 से संबंधित है। अतः सर्वप्रथम राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-15 का उद्धरण यहां प्रासंगिक है। जो कि इस प्रकार है:-

15. Khatedar tenants— (1) *Subject to the provisions of section 16 and clause (d) of Sub-section (1) of section 180 every person who, at the commencement of this Act, is a tenant of land otherwise than as a sub-tenant or a tenant of Khudkasht or who is, after the commencement of this Act, admitted as a tenant otherwise than a sub-tenant or tenant of Khudkasht or an allottee of land under, and in accordance with, rules made under section 101 of the Rajasthan Land Revenue Act, 1956 (Rajasthan Act 15 of 1956) or who acquires Khatedari rights in accordance with provisions of this Act or of the Rajasthan Land Reforms and Resumption of Jagir Act, 1952 (Rajasthan Act VI of 1952) or of any other law for the time being in force shall be a Khatedar tenant and shall, subject to the provision of this Act be entitled to all the rights conferred; and be subject to all the liabilities imposed on Khatedar tenants by this Act.*

Provided that no Khatedari rights shall accrue under this section to any tenant, to whom land is or has been let out temporarily in Gang Canal, Bhakra, Chambal or Jawai project area or any other area notified in this behalf by the State Government.

(2) *Notwithstanding anything contained in sub-section (1) Khatedari rights shall not accrue there under to any person to whom land had been let out before the commencement of this Act by the State Government in furtherance of the Grow More Food Campaign or under some special order subject to some specified conditions or in pursuance of some statutory or non-statutory rules and who shall have, before such commencement, made a default in securing the objective of such campaign or a breach of any such order, condition or rule.*

(3) *Any person referred to in sub-section (2) may, within three years from the date of commencement of this Act and on payment of a court-fee of twenty five naye paise apply to the Assistant Collector having jurisdiction*

praying for a declaration that acquired Khatedari right under sub-section (1) in the land held by him.

(4) Such application may be made on any of the following grounds, namely:

(a) that the land held by him was let out to him after the" commencement of this Act.

(b) that it was not let out to him in any of the circumstances specified in sub-section (2).

(c) that when the- land was so let out to him he was not apprised of such circumstances.

(d) that he had, before such commencement made no default or breach of the nature specified in sub-section (2).

(5) The Assistant Collector shall, upon the presentation of an application under sub-section (3), make inquiry in the prescribed manner and afford reasonable opportunity to the applicant of being heard and shall, if he does not reject the application , declare the applicant to have become Khatedar tenant of his holding in accordance with and subject to the provisions of the subsection (1).

7. प्रकरण में वादी द्वारा राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-15 के अंतर्गत हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत अधिकार सृजित होने के आधार पर खातेदार के रूप में दर्ज होने का अनुतोष चाहा गया है। इस संबंध में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 का प्रकरण में अवलोकन किया जाना आवश्यक है जिसके प्रासंगिक विवरण का उद्धरण इस प्रकार है:-

6. Devolution of interest in coparcenary property.—

(1) On and from the commencement of the Hindu Succession (Amendment) Act, 2005 (39 of 2005), in a Joint Hindu family governed by the Mitakshara law, the daughter of a coparcener shall,—

(a) by birth become a coparcener in her own right the same manner as the son;

(b) have the same rights in the coparcenary property as she would have had if she had been a son;

(c) be subject to the same liabilities in respect of the said coparcenary property as that of a son, and any reference to a Hindu Mitakshara coparcener shall be deemed to include a reference to a daughter of a coparcener:

Provided that nothing contained in this sub-section shall affect or invalidate any disposition or alienation including any partition or testamentary disposition of property which had taken place before the 20th day of December, 2004.

8. उक्त उद्धरण अनुसार हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के अनुसार पुत्र व पुत्री को समान अधिकार व दायित्व

प्राप्त होकर सहदायिकी का दर्जा प्राप्त करने के प्रावधान है। साथ ही अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में कोई सहदायक कभी भी अपना हिस्सा घोषित करवाकर पृथक हिस्सा कायम करवाने हेतु घोषणा एवं विभाजन का दावा लाकर घोषणा एवं विभाजन करवा सकता है। उक्त विधित प्रावधानों के परिप्रेक्ष्य में प्रकरण में तथ्य निर्विवादित है कि वादी व प्रतिवादी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत हिन्दू होने के कारण प्रकरण में सम्पत्ति पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के प्रावधान लागू होते हैं। साथ ही वादी द्वारा प्रस्तुत जमाबंदी के अवलोकन से स्पष्ट है कि मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी है। इस तथ्य को प्रतिवादीगण द्वारा स्वीकार किया गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि उक्त आराजी हिन्दू अविभाजित परिवार की अविभाजित पैतृक व सहदायिकी सम्पत्ति है। साथ ही प्रकरण में यह तथ्य भी निर्विवादित है कि वादीगण प्रतिवादी संख्या 01 के पुत्र हैं। इस आधार पर वादीगण व प्रतिवादी संख्या 01 उक्त हिन्दू अविभाजित परिवार की अविभाजित पैतृक व सहदायिकी सम्पत्ति में सहदायक हैं। अतः वादीगण उक्त अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में सहदायक होने के कारण अपना हिस्सा घोषित करवाकर पृथक हिस्सा कायम करवाने हेतु घोषणा एवं विभाजन का दावा लाकर घोषणा एवं विभाजन करवाने का अधिकारी है।

9. प्रकरण में वादी द्वारा मुतनाजा आराजी पर वादी व प्रतिवादी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत हिन्दू होने के कारण प्रकरण में सम्पत्ति पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के प्रावधानों के तहत मुताबिक कानूनी हिस्सा खातेदारी अधिकारों की घोषणा का अनुतोष चाहा गया है। प्रकरण में वादी संख्या 04 एवं 05 ने अपने अधिकारों का परित्याग करते हुए वादी का प्रथम अनुतोष स्वीकार किया है। परंतु किसी खातेदार का अपने खातेदारी अधिकारों का हकत्याग किया जाना सम्पत्ति का अंतरण अधिनियम-1882 के प्रावधानों के तहत शासित होता है। न्यायालय में वादी या प्रतिवादी राजीनामे के माध्यम से राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 के तहत ही अनुतोष इकरार कर सकते हैं। इस प्रकार वादी संख्या 04 एवं 05 को उक्त खातेदारी आराजी में अपने अधिकारों का परित्यागसम्पत्ति का अंतरण अधिनियम-1882 के प्रावधानों तहत करना होगा। अतः हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के तहत वादीगण के प्रतिवादी संख्या 01 की संतान होने तथा प्रकरण में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 लागू होने तथा मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी होने के आधार पर वादी का अनुतोष मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार हक हिस्से तक स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।

आदेश है कि

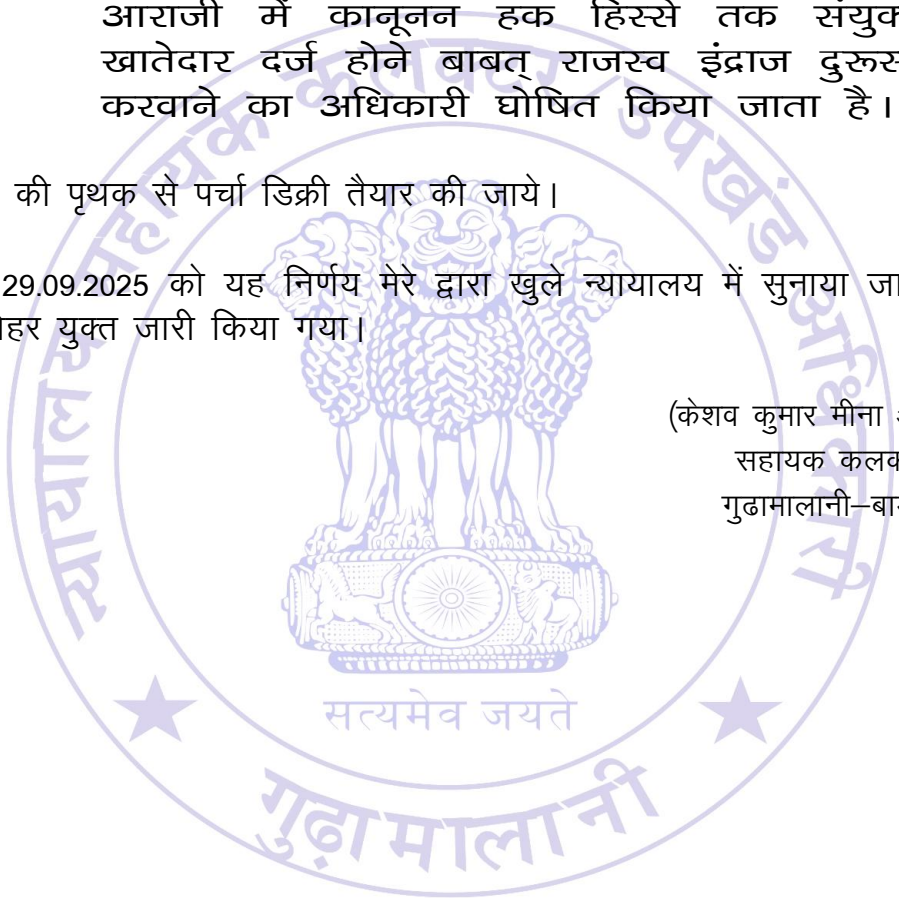
वादीगण का दावा बाबत इस्तकरारहक्क स्वीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। वादीगण को मुतनाजा आराजी हाल खसरा संख्या 214/0.2427 है0, 215/0.0566 है0, 217/0.5744 है0, 216/38.5489 है0, 205/20.7589 है0 मौजा भेराराम मूढ नगर पटवार मण्डल निम्बलकोट तहसील

नोखडा में वादीगण को उक्त अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में सहदायक होने के कारण अपना हिस्सा घोषित करवाकर पृथक हिस्सा कायम करवाने हेतु घोषणा एवं विभाजन का दावा लाकर घोषणा एवं विभाजन करवाने का अधिकारी मानते हुए मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 अनुसार पुत्र एवं पुत्रियों को समान अधिकार मानते हुए प्रतिवादी संख्या 01 के हिस्से की आराजी पर प्रत्येक को 1/6-1/6 हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। वादीगण को उक्त आराजी में कानूनन हक हिस्से तक संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत राजस्व इंद्राज दुरुस्त करवाने का अधिकारी घोषित किया जाता है।

निर्णय की पृथक से पर्चा डिक्री तैयार की जाये।

आज 29.09.2025 को यह निर्णय मेरे द्वारा खुले न्यायालय में सुनाया जाकर हस्ताक्षर एवं मोहर युक्त जारी किया गया।

(केशव कुमार मीना आर.ए.एस)
सहायक कलक्टर
गुढामालानी-बाड़मेर





न्यायालय

सहायक कलक्टर / उपखण्ड अधिकारी

गुढामालानी-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी -केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

वाद संख्या:-2025 / 103

दर्ज तिथि:-28.03.2025

1. जेठाराम पुत्र खेता
2. देवाराम पुत्र खेता
3. ताजाराम पुत्र खेता
4. शांति पुत्री खेता
5. कमला पुत्री खेता

जाति जाट निवासी भेराराम मूढ नगर निम्बलकोट तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर

.....वादी

बनाम

1. खेता पुत्र लादा
2. अणसी पुत्री विरदा
3. खीया पुत्र सोना
4. गंगा पुत्र सोना
5. चूतरा पुत्र बागा
6. जेती पुत्री विरदा
7. तोगा पुत्र बागा
8. देवू पुत्री विरदा
9. धापू पुत्री विरदा
10. पेम्पो पुत्री विरदा
11. राउ पुत्र बागा
12. रामा पुत्र सोना
13. रावता पुत्र बागा
14. लेहरों पुत्री विरदा
15. हुकमा पुत्र बागा
16. खेता पुत्र बागा
17. गंगा पुत्र बागा
18. चेतन पुत्र बागा
19. जगदीश कुमार पुत्र भेराराम
20. तुलछीदेवी पत्नी गंगाराम
21. दुर्गाराम पुत्र भेराराम

22. नरपतराज पुत्र भैरारा
23. पुरखा पुत्र बागा
24. पुराराम पुत्र पूनमाराम
25. पोलाराम पुत्र पूनमाराम
26. भीखीदेवी पत्नी रामाराम
27. भीखा पुत्र बागा
28. लक्ष्मणाराम पुत्र पूनमाराम
29. लाधूदेवी पत्नी खीयाराम
30. हेमा पुत्र बागा

जाति जाट निवासी भैराराम मूढ नगर ग्राम पंचायत निम्बलकोट तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर

31. तहसीलदार नोखड़ा

.....प्रतिवादी

उपस्थित अधिवक्ता
वादी:-श्री ठाकराराम
प्रतिवादी:-एकतरफा

राजस्व वाद अन्तर्गत धारा-88
राजस्थान काश्तकारी अधि0-1955

---:पर्चा डिक्री:-

वादीगण का दावा बाबत इस्तकरारहक्क स्वीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। वादीगण को मुतनाजा आराजी हाल खसरा संख्या 214/0.2427 है0, 215/0.0566 है0, 217/0.5744 है0, 216/38.5489 है0, 205/20.7589 है0 मौजा भैराराम मूढ नगर पटवार मण्डल निम्बलकोट तहसील नोखड़ा में वादीगण को उक्त अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में सहदायक होने के कारण अपना हिस्सा घोषित करवाकर पृथक हिस्सा कायम करवाने हेतु घोषणा एवं विभाजन का दावा लाकर घोषणा एवं विभाजन करवाने का अधिकारी मानते हुए मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 अनुसार पुत्र एवं पुत्रियों को समान अधिकार मानते हुए प्रतिवादी संख्या 01 के हिस्से की आराजी पर प्रत्येक को 1/6-1/6 हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। वादीगण को उक्त आराजी में कानूनन हक हिस्से तक संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत राजस्व इंद्राज दुरुस्त करवाने का अधिकारी घोषित किया जाता है।

यह पर्चा-डिक्री पालनार्थ हेतु तहसीलदार नोखड़ा को भिजवाई जावे। आदेश जारी हो।
पक्षकारान अपना-अपना खर्चा स्वयं वहन करेंगे।

यह पर्चा-डिक्री आज दिनांक 29.09.2025 को मेरे द्वारा लिखवाई जाकर हस्ताक्षर एवं मुहर
युक्त जारी की जाकर खुले न्यायालय में सुनाई गई।

(केशव कुमार मीना आर.ए.एस)
सहायक कलक्टर
गुढामालानी-बाड़मेर

